

# डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 11, नई वाचा

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह वाचा, विशेष रूप से नई वाचा पर सत्र 11 है।

इसलिए, हम नई वाचा को एक व्यापक वाचा के रूप में देख रहे हैं जो अन्य सभी वाचाओं, अब्राहमिक, नूहिक, मूसा की वाचा और दाऊद की वाचा को पूर्णता प्रदान करती है।

वे सभी किसी न किसी तरह से नई वाचा में अपनी पूर्ति पाते हैं, जो कि एक तरह से सर्वव्यापी है। हमने नई वाचा को इस संदर्भ में देखना शुरू किया कि कैसे सुसमाचार इसे यीशु की सेवकाई में, प्रभु के भोज में उनके शब्दों में, जहाँ यीशु को फसह में मनाया जाता है और प्रदर्शित करता है कि उनकी आने वाली मृत्यु, उनका खून, नई वाचा की पुष्टि करता है और उसका उद्घाटन करता है, में पूरा होता है। हमने सुसमाचारों में कई अन्य ग्रंथों को देखा जो वाचा शब्द का उपयोग किए बिना प्रदर्शित करते हैं कि यीशु अपने लोगों को नई वाचा की आशीषें प्रदान करने के लिए वाचा का उद्घाटन करने आए थे।

तो, नई वाचा और लोगों के साथ, उन दो विषयों के साथ, हम आगे परमेश्वर के लोगों पर नज़र डालेंगे, लेकिन वे दो विषय काफी हद तक एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह नए नियम के बाकी हिस्सों में नई वाचा के विषय को देखना है। और एक अनुस्मारक के रूप में, हम इसे कई बार कहेंगे, लेकिन एक अनुस्मारक के रूप में, नई वाचा और इसकी आशीषों की पूर्ति उद्घाटन किए गए युगांतशास्त्र की योजना के अनुसार होती है।

अर्थात्, हम पहले से ही नई वाचा के अंतर्गत वाचा की पूर्ति और आशीषों में भाग लेते हैं और उनका आनंद लेते हैं। इसलिए, ये केवल ऐसी आशीषें नहीं हैं जो किसी तरह से फ़ैल जाती हैं, बल्कि वाचा वास्तव में अधिनियमित नहीं हुई है या ऐसा कुछ नहीं है। लेकिन हम पहले से ही इन आशीषों में भाग लेते हैं क्योंकि नई वाचा पहले से ही यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से अधिनियमित और आरंभ की जा चुकी है, फिर भी वे नई वाचा की अंतिम पूर्णता की आशा करते हैं।

और इसलिए, हम उन दोनों को देखेंगे। हम नए नियम के बाकी हिस्सों में, खास तौर पर पॉलिन साहित्य में, लेकिन कुछ अन्य जगहों पर नए करार के पहले से ही आरंभ होने को देखते हैं, जो सुसमाचारों में जो हम पाते हैं उसके अनुरूप है। फिर, सिर्फ़ कुछ ही ग्रंथों को देखें, खास तौर पर एक, जो नए करार के वादों की अंतिम परिणति को प्रदर्शित करता है।

तो, यह पहले से ही उसी योजना के अनुसार होता है, लेकिन अभी तक नहीं, जिसे हमने दूसरों के साथ देखा है, नए नियम में अन्य विषय, और अन्य बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय। और फिर आपको याद दिलाने के लिए दूसरी बात यह है कि हम जिन ग्रंथों का उल्लेख करेंगे उनमें से कई

ऐसे हैं जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं। इसलिए, जैसा कि हमने कहा है, इनमें से अधिकांश विषय एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और आपस में जुड़े हुए हैं।

इसलिए, एक विषय का उल्लेख करते समय उन्हें अलग करना अक्सर मुश्किल होता है, आप दूसरे का उल्लेख कर रहे हैं। इसलिए, इनमें से कुछ पाठ जो पुनर्स्थापना और नई सृष्टि का उल्लेख करते हैं, या जिन्हें हम देखेंगे, हम अब परमेश्वर के लोगों का उल्लेख करेंगे, या यहाँ तक कि पुरानी वाचा या दाऊद की वाचा का भी उल्लेख करेंगे, जिसे हम नई वाचा के संदर्भ में भी पाएंगे। और फिर हम इनमें से कुछ पाठों को फिर से दोहराएँगे; हम उन्हें परमेश्वर के लोगों के विषय का उल्लेख करने वाले महत्वपूर्ण पाठों के रूप में देखेंगे, लेकिन नए नियम के बाकी हिस्सों में नई वाचा।

मैं एक ऐसे पाठ से शुरुआत करना चाहता हूँ जिसमें नए नियमों और पुराने नियम से नए नियम के पाठों का स्पष्ट संदर्भ है और उन्हें कैसे विकसित किया गया है। और फिर, हम कई अंतर्निहित पाठों को देखेंगे। और इससे मेरा मतलब उन पाठों से है जो ज़रूरी नहीं कि वाचा शब्द का इस्तेमाल करें या स्पष्ट रूप से वाचा का उल्लेख करें या पुराने नियम से उन अंशों का उल्लेख करें जो नए नियम का उल्लेख करते हैं।

लेकिन फिर भी, वे नई वाचा के तत्वों को मूर्त रूप देते प्रतीत होते हैं। वे आशीर्वादों का संचार करते प्रतीत होते हैं या नई वाचा के आशीर्वादों से निपटते हैं, जैसे कि पापों की क्षमा और ऐसी ही अन्य चीजें, जो यह सुझाव देती हैं कि लेखक नई वाचा को ग्रहण कर रहा है या ये आशीर्वाद जिनका लेखक वर्णन कर रहा है वे वे हैं जो नई वाचा की स्थापना और उद्घाटन से जुड़े हैं। इसलिए, मैं एक स्पष्ट पाठ से शुरू करना चाहता हूँ, और वह है दूसरा कुरिन्थियों अध्याय तीन और दूसरा कुरिन्थियों अध्याय तीन।

और मैं पहली आयत और कुछ आयतों से पढ़ना शुरू करूँगा। मैं किसी भी तरह से पूरा अध्याय नहीं पढ़ूँगा, बल्कि इसकी पहली कुछ आयतें पढ़ूँगा, जिसका स्पष्ट रूप से पॉल उपयोग कर रहा है, जैसा कि आप देखेंगे कि यह भाषा नई वाचा के ग्रंथों से आती है, विशेष रूप से यिर्मयाह अध्याय 31 और यहेजकेल अध्याय 36 और 37। तो, 2 कुरिन्थियों के अध्याय तीन और पहली आयत से शुरू करते हुए, पॉल कहता है, क्या हम फिर से खुद की प्रशंसा करना शुरू कर रहे हैं? या हमें आपके लिए या आपसे कुछ लोगों की सिफ़ारिश के पत्रों की ज़रूरत है? आप स्वयं ही हमारे दिलों पर लिखे गए हमारे पत्र हैं, जिन्हें हर कोई जानता और पढ़ता है।

तुम जानते हो कि तुम मसीह की ओर से एक पत्र हो। उनके परिणामस्वरूप एक सेवकाई लिखी गई है, जो स्याही से नहीं, बल्कि जीवते परमेश्वर की आत्मा से, पत्थर की पटियाओं पर नहीं, बल्कि मानव हृदय की पटियाओं पर लिखी गई है, ऐसा भरोसा हमें मसीह के द्वारा परमेश्वर के सामने है, यह नहीं कि हम अपने आप में अपने लिए कुछ दावा करने के लिए सक्षम हैं, बल्कि हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। उसने नई वाचा की सेवकाईयों के रूप में सक्षम बनाया है।

इसलिए, नए नियम का स्पष्ट संदर्भ है, अक्षर का नहीं, बल्कि आत्मा का, क्योंकि अक्षर मारता है, लेकिन आत्मा जीवन देती है। अब, यदि मृत्यु लाने वाली सेवकाई, जिसे अक्षरों और पत्थरों में

उकेरा गया था, महिमा के साथ आई ताकि इस्राएली मूसा के चेहरे पर स्थिर होकर न देख सकें, क्योंकि इसकी महिमा एक क्षणभंगुर विचार है, तो क्या आत्मा की सेवकाई या नई वाचा और भी अधिक महिमामय नहीं होगी। यदि निंदा लाने वाली सेवकाई महिमामय थी, तो धार्मिकता लाने वाली सेवकाई कितनी अधिक महिमामय है? धार्मिकता लाने वाली सेवकाई, जो कि महिमामय थी, के लिए नई वाचा होने के नाते, अब श्रेष्ठ महिमा की तुलना में कोई महिमा नहीं है।

और अगर वह क्षणभंगुर था, अगर जो क्षणभंगुर था वह महिमा के साथ आया, तो उसकी महिमा कितनी अधिक है, जो स्थायी है, इसलिए, चूंकि हमारे पास ऐसी आशा है, हम बहुत साहसी हैं। हम मूसा की तरह नहीं हैं, जिसने इस्राएलियों को जो कुछ बीत रहा था उसका अंत देखने से रोकने के लिए अपने चेहरे पर पर्दा डाल लिया था। लेकिन उनके दिमाग गुड़िया बन गए थे, क्योंकि आज भी, जब पुरानी वाचा पढ़ी जाती है तो वही पर्दा बना रहता है।

इसे हटाया नहीं गया है क्योंकि इसे केवल मसीह में ही हटाया गया है। आज भी, जब मूसा को पढ़ा जाता है, तो उनके दिलों पर पर्दा पड़ जाता है। मैं सीधे श्लोक 17 और 18 पर आता हूँ।

अब प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। और हम सभी जो, खुले चेहरों के साथ, प्रभु की महिमा का चिंतन करते हैं, हमेशा-बढ़ती महिमा के साथ उसकी छवि में परिवर्तित हो रहे हैं, जो प्रभु से आती है, जो आत्मा है। अब, इस खंड में, मैंने अभी पढ़ा, हम बहुत कुछ कह सकते हैं।

और एक बार फिर, हमारे पास इस तरह के ग्रंथों और अन्य ग्रंथों में विस्तृत व्याख्या करने और इस अंश के बारे में आपके सभी सवालों के जवाब देने का समय नहीं है। लेकिन मैं इस पाठ में नई वाचा से संबंधित कई टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। सबसे पहले, इस पाठ का भार यह प्रदर्शित करना है कि पौलुस मूसा के अनुरूप नई वाचा का सेवक है, जो पुरानी वाचा का सेवक है।

इसलिए, पौलुस खुद की तुलना मूसा से करता है, तुलना करता है और विरोधाभास करता है; मूसा ने व्यवस्था दी, लेकिन अब पौलुस अपनी सेवकाई के माध्यम से लोगों को नई वाचा की आत्मा की मध्यस्थता करता है। तो ध्यान दें, व्यवस्था ने जो किया और मूसा की सेवकाई के तहत व्यवस्था ने जो हासिल किया, उसके बीच आगे-पीछे तुलना और विरोधाभास पर ध्यान दें। और अब नई वाचा की असाधारण महानता और महिमा।

इसलिए, पॉल कहते हैं, हाँ, पुरानी वाचा के साथ महिमा जुड़ी हुई थी, लेकिन नई वाचा के साथ जुड़ी महिमा से कितनी बड़ी है कि अब पॉल खुद को एक मध्यस्थ के रूप में देखता है। इसलिए, पॉल खुद और मूसा के बीच एक तुलना स्थापित कर रहा है, क्योंकि मूसा पुरानी वाचा का मंत्री था। अब पॉल खुद को नई वाचा का मंत्री और मध्यस्थ के रूप में देखता है, जैसा कि विशेष रूप से पवित्र आत्मा की उपस्थिति से संकेत मिलता है।

तो पहले से ही, पवित्र आत्मा का संदर्भ नए वाचा के ग्रंथों को याद दिलाता है, जैसे कि जोएल अध्याय दो और यहजकेल अध्याय 36 जिसमें पवित्र आत्मा का उंडेला जाना है। और हम इस पर फिर से वापस आएंगे, लेकिन, लेकिन, लेकिन एक बार फिर, यह एक प्रदर्शन है कि जब हम

पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हैं, और हम पवित्र आत्मा के संदर्भ देखते हैं, न केवल यहाँ 2 कुरिन्थियों तीन में, बल्कि नए नियम में पॉल के पत्रों में कहीं और, यह अंततः पुराने नियम में निहित है। यह एक ईसाई बात नहीं है।

यह पॉल का आविष्कार नहीं है। यह ऐसी बात नहीं है जिस पर अचानक नए नियम के लेखकों ने ज़ोर देने का फैसला किया हो। लेकिन, पवित्र आत्मा की उपस्थिति पुराने नियम में परमेश्वर की नई वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति से कम नहीं है।

इसलिए, पौलुस खुद को मूसा की तरह नई वाचा का सेवक मानता है, जो पुरानी सूचना का सेवक था। दिलचस्प बात यह है कि पौलुस की सेवकाई को यिर्मयाह की सेवकाई के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। जैसा कि हमने कहा, अध्याय तीन में पौलुस ने जो कुछ कहा है, वह यिर्मयाह की पुस्तक, विशेष रूप से अध्याय 31, नई वाचा के अंश से ली गई भाषा पर आधारित है, लेकिन अन्यत्र भी, ध्यान दें कि बाद में 2 कुरिन्थियों के अध्याय 10 और पद आठ में, पौलुस अपनी सेवकाई का इस तरह वर्णन करता है।

इसलिए, भले ही मैं अधिकार के बारे में कुछ हद तक खुलकर दावा करूँ, लेकिन प्रभु ने हमें प्रेरितों को हमें तोड़ने के बजाय बनाने के लिए दिया है। मैं इसके लिए शर्मिंदा नहीं होऊँगा। और बनाने और तोड़ने की वह भाषा वास्तव में यिर्मयाह की पुस्तक से यिर्मयाह अध्याय एक की शुरुआत में ही आती है।

नबी ने नौवीं और दसवीं आयत में अपने बुलावे और अपनी सेवकाई का वर्णन किया है: तब प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ और मुझसे कहा, मैंने अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डाल दिए हैं। आज देखो, और मैं तुम्हें राष्ट्रों और राज्यों पर निर्देश देता हूँ कि उन्हें उखाड़ फेंको और ढा दो, नष्ट करो और गिरा दो, निर्माण करो और रोपो। लेकिन अब, पौलुस और उसमें से बहुत कुछ इसलिए था क्योंकि यिर्मयाह का संदेश इस्राएल और राष्ट्रों पर न्याय का संदेश था, लेकिन साथ ही नई वाचा में बहाली का एक त्वरित वादा भी था।

अब, एक तरह से, इसके विपरीत, पॉल हमें 2 कुरिन्थियों के अध्याय 10 में बताता है कि वह अपनी सेवकाई को तोड़ने के रूप में नहीं बल्कि मुख्य रूप से निर्माण के रूप में देखता है। मैं इसे अपनी सेवकाई के माध्यम से लोगों के लिए नई वाचा, पवित्र आत्मा की मध्यस्थता के माध्यम से लेता हूँ। इसलिए अब पॉल तोड़ने के बजाय निर्माण करता है, क्योंकि नई वाचा का उद्घाटन हो चुका है और क्योंकि उसकी सेवकाई लोगों के लिए नई वाचा, पवित्र आत्मा की मध्यस्थता करने वाली है।

इस पूरे पाठ में, फिर से, पुरानी वाचा के बीच के अंतर पर ध्यान दें, जो लिखित व्यवस्था पर केंद्रित थी। तो पत्थर पर लिखी गई यह भाषा और पत्थर पर अक्षरों में उकेरी गई आयत सात, यहाँ तक कि स्याही में लिखी गई, यह, यह, की, की, की, की, की, की, की, की, की, यह पुरानी वाचा को संदर्भित करती है। नई वाचा इस तथ्य से प्रदर्शित होती है कि परमेश्वर अब पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से मानव हृदयों में काम कर रहा है।

पॉल यह भी कह सकता है कि कानून मारता है, लेकिन अंततः, आत्मा नई वाचा, पवित्र आत्मा को जीवन देती है। फिर से, हम एक पल में देखेंगे कि वह भाषा नई वाचा के पाठ पर वापस जाती है, जैसे कि यिर्मयाह अध्याय 31 और यहजेकेल अध्याय 36 या 37। तो फिर, जब पॉल अध्याय दो, अध्याय तीन की आयत, दूसरे कुरिन्थियों की आयत तीन में वर्णन करता है, तो वह कहता है, आप दिखाते हैं कि आप मसीह से एक पत्र हैं और हमारी सेवकाई का परिणाम स्याही से नहीं, बल्कि जीवित परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है, पत्थर की पट्टियों पर नहीं, मोज़ेक कानून की तरह, बल्कि मानव हृदय की पट्टियों पर स्पष्ट रूप से यहजेकेल अध्याय 36 का संकेत देता है।

और साथ ही, खास तौर पर यिर्मयाह अध्याय 31 और आयत 31 से 34 के लिए, जहाँ यह वह वाचा है जो मैं इस्राएल के लोगों के साथ बाँधूँगा। मैं अपनी व्यवस्था उनके हृदय में डालूँगा और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा। इसलिए, पौलुस स्पष्ट रूप से यिर्मयाह 31 और नई वाचा के पाठ का संकेत देता है।

इस खंड में स्पष्ट रूप से नई वाचा जीवन देने वाली पवित्र आत्मा की शक्ति और उपस्थिति पर निर्भर करती है। इसलिए, नई वाचा के पौलुस के मंत्रालय के केंद्र में, जैसा कि पौलुस ने वर्णन किया है, नई वाचा के केंद्र में परमेश्वर की जीवन देने वाली आत्मा है। इसलिए फिर से, वह छंद छह में कहता है, छंद छह कि पौलुस द्वारा सेवा की जाने वाली नई वाचा एक पत्र की नहीं बल्कि आत्मा की है, क्योंकि पत्र मारता है, आत्मा जीवन देती है।

और यही बात हम पद सात में भी पाते हैं। अब, यदि वह सेवा जो मृत्यु लेकर आई, जो पत्थरों पर अक्षरों में खोदी गई थी, इतनी महिमा के साथ आई कि वे उसे देख भी नहीं सकते थे। पद आठ, तो क्या आत्मा की सेवा और भी महिमामय नहीं होगी?

और फिर श्लोक 18. और हम सभी जो खुले चेहरों से प्रभु की महिमा का चिंतन करते हैं, हम उसकी छवि में, हमेशा बढ़ती महिमा के साथ बदलते जा रहे हैं, जो प्रभु से आती है, जो आत्मा है। इसलिए, पवित्र आत्मा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जीवन देने वाली आत्मा नई वाचा के बारे में पौलुस की समझ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा, इस खंड में, पौलुस यह भी आश्वस्त है कि नई वाचा के युग के उद्घाटन का प्रमाण इसके परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तित जीवन हैं। परमेश्वर के लोगों के परिवर्तित जीवन में परिवर्तित जीवन इस बात का प्रमाण है कि नई वाचा के युग का उद्घाटन और पूर्ति यहजेकेल और यिर्मयाह द्वारा की गई है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, यहजेकेल अध्याय 36 और श्लोक 25 से 27 में, एक बार फिर, मुझे पता है कि हम इन ग्रंथों को पहले ही पढ़ चुके हैं, लेकिन अन्य चीजों के संबंध में। लेकिन अब हम पाते हैं कि पौलुस स्पष्ट रूप से यहजेकेल के अध्याय 36 और 25 और 26 में इनमें से कई का उल्लेख कर रहा है, मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी अशुद्धियों और तुम्हारी सभी मूर्तियों से शुद्ध करूँगा।

मैं तुम्हें नया हृदय दूंगा, और अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा। मैं तुम्हारे पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। और फिर, उस हृदय की भाषा पर ध्यान दें, 2 कुरिन्थियों तीन में पत्थर और आत्मा के अंतर के प्रकाश में मांस का हृदय पत्थर के हृदय के विपरीत है, उस नोट के प्रकाश में, फिर से, 2 कुरिन्थियों तीन के श्लोक 18 में पौलुस क्या कहता है, हम सब, जो खुले चेहरों से प्रभु की महिमा का ध्यान करते हैं, प्रभु से आने वाली सदा-बढ़ती महिमा के साथ उसकी छवि में बदलते जा रहे हैं, जो आत्मा है।

और कम से कम वैचारिक रूप से, फिर से, हम यहाँ पौलुस को आत्मा प्राप्त करने के साथ परिवर्तन को जोड़ते हुए पाते हैं, जो कि वही संबंध है जो यहजकेल अध्याय 36 में पाया जाता है कि शुद्धिकरण होगा क्योंकि परमेश्वर अपनी आत्मा को अपने लोगों में रखेगा। और इसी तरह, दूसरे कुरिन्थियों के अध्याय तीन और पद छह में, उसने हमें एक नई वाचा के सेवकों के रूप में योग्य बनाया है, न कि शब्दों के, बल्कि आत्मा के, क्योंकि शब्द मारता है, लेकिन आत्मा जीवन देती है। फिर से, यिर्मयाह 31 और 31 और 34 का एक स्पष्ट संकेत, और परमेश्वर लोगों पर अपनी आत्मा उंडेल रहा है या उन्हें एक नया दिल दे रहा है और उनके दिल में व्यवस्था लिख रहा है।

इसलिए, वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और उन्हें पालन करने में सक्षम हैं और उन्हें उनकी मूर्तिपूजा और उनके पाप से शुद्ध करते हैं। हालाँकि, इस खंड की मुख्य विशेषता, या मुझे कहना चाहिए कि एक और मुख्य विशेषता, मुख्य विशेषता नहीं, बल्कि एक और मुख्य विशेषता, यह एक बार फिर दिलचस्प है कि हमें एक ऐसा पाठ मिलता है जो मूल रूप से यहजकेल 36 और यिर्मयाह 31 में अपने संदर्भ में, एक ऐसा पाठ है जो राष्ट्रीय इस्राएल में पूरा हुआ था या पूरा होना था। फिर से, यहजकेल 36 और यिर्मयाह 31 दोनों परमेश्वर के लोगों, इस्राएल की बहाली के संदर्भ में हैं।

लेकिन अब हम पाते हैं कि ये नई वाचा की प्रतिज्ञाएँ और पाठ राष्ट्रीय इस्राएल में पूरी नहीं हुई हैं, बल्कि मसीह में प्रकाश की पूर्ति में यहूदी और गैर-यहूदी सभी लोगों को शामिल करने के लिए विस्तारित की गई हैं। इसलिए, पौलुस ने 2 कुरिन्थियों में स्पष्ट रूप से कुरिन्थ के शहर में एक गैर-यहूदी मसीही को संबोधित किया। और अब वे परमेश्वर की नई वाचा की प्रतिज्ञाओं में भागीदार हैं, जो फिर से, पुराने नियम में, मूल रूप से इस्राएल पर लागू होती हैं, लेकिन अब विस्तारित होती हैं और गैर-यहूदियों को शामिल करती हैं।

हम इस बारे में और बात करेंगे जब हम परमेश्वर के लोगों के विषय पर पहुँचेंगे, कि पौलुस और अन्य नए नियम के लेखक ऐसा क्यों और कैसे करते हैं। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, यह है कि परमेश्वर के लोगों के अधीन क्या अधिक पूर्ण रूप से विकसित होगा, इसका पूर्वानुमान लगाना। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि नए नियम के लेखक इन वादों को सबसे पहले यीशु मसीह में पूरा होते हुए देखते हैं। सुसमाचारों की हमारी चर्चा पर वापस जाते हुए, हम इसे इब्रानियों की पुस्तक में भी देखेंगे: नई वाचा के वादे सबसे पहले यीशु मसीह में पूरे होते हैं; उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान नई वाचा को प्रमाणित करते हैं, उसका उद्घाटन करते हैं और उसे लागू करते हैं।

उसके लोगों ने भी नई वाचा में भाग लिया। और नई वाचा उनमें और उनके लिए यीशु मसीह से संबंधित होने के कारण पूरी हुई। इसलिए हम 1 कुरिन्थियों या 2 कुरिन्थियों के अध्याय तीन में पाते हैं कि यहजेकेल और यिर्मयाह के ये नए वाचा के पाठ अब राष्ट्रीय इस्राएल में नहीं, जातीय रूप से इस्राएली लोगों में नहीं, बल्कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूर्णता के कारण सभी लोगों को शामिल करने के लिए विस्तारित होते हैं।

2 कुरिन्थियों तीन में नई वाचा की अंतिम विशेषता यह है कि यदि आप उस खंड पर जाते हैं जिसे हमने पहले ही कुछ चीजों के संबंध में देखा है, और यदि आप 2 कुरिन्थियों अध्याय छह पर जाते हैं तो हम फिर से देखेंगे, हम देखेंगे कि नई वाचा के बारे में पौलुस की चर्चा वाचा के सूत्र में चरम पर है जिसमें परमेश्वर बीच में निवास करता है। तो, 2 कुरिन्थियों अध्याय छह और पद 16 में, जहाँ पौलुस कहता है, परमेश्वर के मंदिर और मूर्तियों के बीच क्या समझौता है क्योंकि हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं? जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, मैं उनके साथ रहूँगा और उनके बीच चलूँगा, और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।

अब, हमने इस पाठ को मंदिर विषय के संबंध में देखा है, जो वाचा के विषय से निकटता से जुड़ा हुआ है। लेकिन यहाँ, पौलुस की नई वाचा की चर्चा अब परमेश्वर के संदर्भ में चरम पर पहुँचती है, परमेश्वर के अपने लोगों के साथ रहने के साथ वाचा का सूत्र। एक बार फिर, यह पाठ संभवतः लैव्यव्यवस्था 26 और यहजेकेल 37 और श्लोक 26 और 27 दोनों का एक संयोजन है, जो कि नई वाचा के उद्घाटन के बारे में यहजेकेल की चर्चा के बीच वाचा का सूत्र है, जिसे हम पौलुस को पहले से ही अध्याय तीन में संदर्भित करते और संदर्भित करते हुए देखते हैं।

अब, वह यहजेकेल 37 को फिर से उठाता है और इसका संकेत देता है या वास्तव में इसे नई वाचा की अपनी समझ के हिस्से के रूप में उद्धृत करता है। नई वाचा का एक हिस्सा यह है कि परमेश्वर अब अपने लोगों के साथ निवास करता है और उनके साथ रहता है। लेकिन हमने मंदिर विषय के साथ देखा, एक भौतिक मंदिर संरचना के संदर्भ में नहीं, बल्कि लोग स्वयं अब परमेश्वर का मंदिर और परमेश्वर का निवास स्थान हैं।

वैसे, बाद में, मैंने 2 कुरिन्थियों 6 की आयत 16 पढ़ी। यदि आप आयत 18 में दो आयत नीचे जाएँ, तो पॉल 2 शमूएल 7 की आयत 14 से उद्धरण देता है, मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर कहता है। वह वास्तव में 2 शमूएल 7 को यशायाह के एक पाठ के साथ जोड़ता है, लेकिन यह दिलचस्प है। हम पहले ही कह चुके हैं कि इस बारे में जो अनोखी बात थी वह यह है कि पॉल ने दाऊद की वाचा के सूत्र को इस बिंदु पर यीशु पर नहीं, बल्कि उसके लोगों, उसके अनुयायियों पर लागू किया।

दूसरे शब्दों में, दिलचस्प बात यह है कि पौलुस जो सुझाव दे रहा है वह नई वाचा के तहत परमेश्वर के लोगों की बहाली है। नई वाचा की पूर्ति और परमेश्वर के लोगों के साथ नई वाचा की स्थापना अब दाऊद के बेटे, यीशु मसीह के शासनकाल में होती है। दूसरे शब्दों में, नई वाचा, जिस तरह से वाचा अंततः पूरी होगी, वह भी नई वाचा की स्थापना के संदर्भ में है।

मैं आपको याद दिलाना चाहूँगा कि यह सब पवित्रता के संदर्भ में भी है। पौलुस ने अध्याय 6 में इन वचनों को उद्धृत करने का पूरा कारण अपने पाठकों को उन लोगों से अलग होने के लिए कहना है जो आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध हैं। इसलिए, जैसा कि हमने कहा, मुख्य विशेषता, मुख्य प्रमाण, और मुख्य चिह्न कि नई वाचा साकार हुई है, लोगों के परिवर्तित जीवन और उनकी पवित्रता हैं।

जैसा कि हम यहेजकेल 36 और यिर्मयाह 31 में पढ़ते हैं, परमेश्वर उन्हें उनके पापों से शुद्ध करेगा। परमेश्वर उन्हें उनकी दुष्टता और मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा, उनके हृदयों पर अपना नियम लिखेगा, और उनके भीतर अपनी आत्मा डालेगा। इसलिए अनिवार्य रूप से, यदि कोई व्यक्ति नई वाचा के उद्धार में भाग लेता है, यदि किसी ने नई वाचा की पवित्र आत्मा प्राप्त की है, तो अनिवार्य रूप से वह एक परिवर्तित जीवन जीने और एक परिवर्तित जीवन में और शुद्धता और पवित्रता के जीवन का अनुसरण करने में इसका उदाहरण प्रस्तुत करने से नहीं बच सकता।

तो, 2 कुरिन्थियों 3 एक महत्वपूर्ण पाठ है जो पौलुस की नई वाचा की समझ को विकसित करता है। एक बार फिर, हम इसके बारे में बहुत सी अन्य बातें कह सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हमने 2 कुरिन्थियों में यह दिखाने के लिए पर्याप्त कहा है कि नई वाचा पौलुस के लिए भी एक बुनियादी संरचना है, जहाँ तक परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंध, लोगों के उद्धार और परिवर्तित जीवन और पवित्रता और शुद्धता को समझने की बात है जिसे वह अपने लोगों को जीते हुए देखना चाहता है, उनके जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य और भूमिका। ये सभी चीजें नई वाचा की संरचना के अंतर्गत आती हैं जिसका उद्घाटन यीशु मसीह के व्यक्तित्व में किया गया है, और अब उसके लोग भी इसमें भाग लेते हैं।

तो, 2 कुरिन्थियों 3 एक स्पष्ट पाठ है, 2 कुरिन्थियों के अध्याय 3 से अध्याय 6 तक एक स्पष्ट पाठ है जो नई वाचा का उल्लेख करता है। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह शायद कई निहित पाठों को देखना है जो एक बार फिर नई वाचा के आशीर्वाद या तत्वों का उल्लेख करते हैं। भले ही वे नई वाचा या नई वाचा की भाषा का स्पष्ट रूप से उपयोग न करें, लेकिन वे निश्चित रूप से नई वाचा की उपस्थिति और पूर्ति को मानते हैं।

उनमें से एक तथ्य यह है कि हम पाते हैं कि पौलुस ने कई स्थानों पर परमेश्वर के नए लोगों के गठन का उल्लेख किया है। एक पाठ जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, वह महत्वपूर्ण है इसलिए मैं पूरे खंड को फिर से नहीं पढ़ूँगा, वह है इफिसियों अध्याय 2, श्लोक 11 से 22, एक ऐसा अंश जहाँ हमने देखा कि पौलुस ने फिर से, हालाँकि वह इसे उद्धृत नहीं करता है, लेकिन वह अवधारणाओं और पाठों, विशिष्ट पाठों, विशेष रूप से यशायाह की पुस्तक से, और यशायाह में वे पाठ परमेश्वर के लोगों इस्राएल की पुनर्स्थापना के संदर्भ में हैं। अब, पौलुस इफिसियों 2:11 से 22 में उन लोगों का संकेत देता है, जहाँ क्रूस पर मसीह की मृत्यु के कारण, वह वादा किया गया शांति लाया है जिसकी यशायाह ने आशा की थी।

उसने वादा किया हुआ वह पुनर्स्थापना लाया है जिसकी यशायाह ने आशा की थी। उसने यहूदी और गैरयहूदी को एक नई मानवता, एक नए शरीर और चर्च में एकजुट करके यशायाह में प्रत्याशित वादा किया हुआ नया सृजन और नई मानवता वापस लाई। इसलिए, इफिसियों 2, 11 से 22 पुनर्स्थापना ग्रंथों, परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना पर आधारित प्रतीत होता है, जो यहूदी



और गैरयहूदी को एक नई मानवता, एक नए शरीर, चर्च में यीशु मसीह के माध्यम से एकजुट करने में अपनी पूर्णता पाता है।

इसके अलावा, नए वाचा के सूत्र की तरह, और 2 कुरिन्थियों 3 और 6 में जो हमने पाया, उसके समान, इफिसियों 2:11 से 22 में परमेश्वर के मंदिर में अपने लोगों के साथ वास करने के साथ चरमोत्कर्ष होता है। इसलिए भले ही इफिसियों 2:11 से 22 में वाचा शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, लेकिन यह निश्चित रूप से परमेश्वर के नए लोगों की पुनर्स्थापना के साथ इसे ग्रहण करता हुआ प्रतीत होता है जो इफिसियों 2:11 से 22 में परमेश्वर के मंदिर वाचा में अपने लोगों के साथ वास करने के साथ चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है, जहाँ अब लोगों को एक पवित्र मंदिर के रूप में बनाया जा रहा है जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के साथ वास करता है। हम अन्य ग्रंथों की ओर भी इशारा कर सकते हैं, जहाँ पौलुस ने यहूदी और गैर-यहूदी दोनों से मिलकर परमेश्वर के नए लोगों के गठन की कल्पना की है, जो संभवतः नए वाचा के उद्घाटन और स्थापना को मानता है।

क्योंकि एक बार फिर, जब आप नई वाचा के ग्रंथों, खासकर यहजेकेल और यिर्मयाह को पढ़ते हैं, तो वे सभी परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के संदर्भ में हैं और मानते हैं। इसलिए, यदि परमेश्वर के लोग अब बन रहे हैं और नवीनीकृत हो रहे हैं और बनाए और बहाल किए जा रहे हैं, तो नई वाचा का उद्घाटन किया जाना चाहिए और उसे लागू किया जाना चाहिए। नई वाचा का एक और निहित संदर्भ पापों की क्षमा के बारे में पौलुस के संदर्भ होंगे।

अब, ऐसे कई ग्रंथ हैं जिनका हम हवाला दे सकते हैं, लेकिन आपको पूरे साहित्य में इस विषय के महत्व का एक उदाहरण देने के लिए, अध्याय 3 और श्लोक 24 और 25 में, मैं इसका समर्थन करूँगा। श्लोक 23, हम सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं और हम सभी यीशु मसीह द्वारा आए छुटकारे के माध्यम से उसकी कृपा से स्वतंत्र रूप से न्यायोचित ठहराए गए हैं और मसीह को विश्वास द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अपने रक्त के बहाने के माध्यम से प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया क्योंकि, अपनी सहनशीलता में, उसने पहले किए गए पापों को बिना दण्ड के छोड़ दिया था।

इसलिए, यह तथ्य कि मसीह की मृत्यु अब पाप की समस्या से निपटती है और प्रायश्चित के बलिदान के माध्यम से पापों की क्षमा लाती है। हम इस पाठ को बाद में थोड़ा और विस्तार से समझेंगे, लेकिन स्पष्ट रूप से क्रूस पर मसीह की मृत्यु, मानवता के पापों से निपटना, और नई वाचा के वादों की पूर्ति को रेखांकित करते हैं। अधिक स्पष्ट रूप से, गलातियों अध्याय 1 और पद 4। मैं वापस आऊँगा और पद 3 से शुरू करूँगा। हमारे पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले, जिन्होंने हमारे पापों के लिए खुद को दे दिया ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें वर्तमान बुरे युग से छुड़ा सकें।

उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। तो, परमेश्वर द्वारा हमारे पापों के लिए मसीह को देने की धारणा, लोगों के पापों के लिए क्रूस पर मसीह की मृत्यु, फिर से, मुझे लगता है, नई वाचा की भाषा को ग्रहण करती है।

इफिसियों अध्याय 1 और श्लोक 7. उसमें, हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिलता है, परमेश्वर के अनुग्रह के धन के अनुसार पापों की क्षमा। तो, एक बार फिर, पापों की क्षमा यीशु की मृत्यु और उसके लहू के साथ जुड़ी हुई है, जो नई वाचा से जुड़ी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति है। इसलिए, जब पौलुस अपने पत्र में या नए नियम के अन्य लेखकों ने अपने पत्रों में पापों की क्षमा का उल्लेख किया, तो मुझे विश्वास हो गया कि इसके पीछे नई वाचा के उद्घाटन और स्थापना की धारणा है, जो पापों की क्षमा और शुद्धिकरण का वादा करती है।

एक और अंतर्निहित पाठ जिसका मैंने पहले ही कई बार उल्लेख किया है, लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर 2 कुरिन्थियों 3 में पॉल की चर्चा के प्रकाश में, पवित्र आत्मा की उपस्थिति है। लोगों को पवित्र आत्मा का उपहार, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, एक चर्च सिद्धांत या एक ईसाई सिद्धांत नहीं है जिसे नए नियम के लेखकों ने अचानक से गढ़ा या तय किया ताकि किसी नए रहस्योद्घाटन पर जोर दिया जा सके या प्राप्त किया जा सके जो अब महत्वपूर्ण है। लेकिन परमेश्वर के लोगों और चर्च को पवित्र आत्मा का वादा और उपहार नई वाचा की पूर्ति से कम नहीं है।

स्पष्ट रूप से, 2 कुरिन्थियों में, हम देखते हैं कि पौलुस ने वादा किए गए पवित्र आत्मा को नई वाचा के साथ जोड़ा है। लेकिन नए नियम में अन्य ग्रंथों का उपयोग इसे प्रदर्शित करने के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, रोमियों 8 में, मैं पूरा अंश नहीं पढ़ूंगा, लेकिन यदि आप इसे सरसरी तौर पर पढ़ें, तो ध्यान दें कि कितनी बार पवित्र आत्मा का संदर्भ दिया गया है।

बस मुझे रोमियों 8 की आयत 5 और 6 पढ़ने दीजिए। जो लोग शरीर के अनुसार जीते हैं, उनका मन शरीर की इच्छाओं पर टिका होता है, लेकिन जो लोग आत्मा के अनुसार जीते हैं, उनका मन आत्मा की इच्छाओं पर टिका होता है। शरीर द्वारा संचालित मन मृत्यु है, लेकिन आत्मा द्वारा संचालित मन जीवन और शांति है। उस पाठ में यह भी दिलचस्प है कि आत्मा द्वारा जीवन देने के बीच संबंध है, जो वही संबंध है जिसे आप 2 कुरिन्थियों 3 में पौलुस द्वारा बनाते हुए पाते हैं, जहाँ वह स्पष्ट रूप से नई वाचा की वास्तविकताओं का संकेत देता है।

1 कुरिन्थियों 12, मैं इसे नहीं पढ़ूंगा, लेकिन आत्मा के प्रसिद्ध उपहारों को पढ़ूंगा। गलातियों 5, 16-18, और 22-25, आत्मा के प्रसिद्ध फल। इसके अलावा, इफिसियों 1:13-14, और जब आपने सत्य का संदेश, अपने उद्धार का सुसमाचार सुना, तो आप भी मसीह में शामिल हो गए, जब आपने विश्वास किया कि आप उसमें एक मुहर के साथ चिह्नित किए गए थे, जो कि वादा किया गया पवित्र आत्मा है, जो उन लोगों के छुटकारे तक हमारी विरासत की गारंटी देता है जो उसकी महिमा की प्रशंसा के लिए परमेश्वर के अधिकार हैं।

इसलिए पवित्र आत्मा की मुहर लगाने की इस भाषा में भी, 1 कुरिन्थियों 12 में इस्तेमाल किए गए कुछ अलग-अलग रूपकों पर ध्यान दें, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, आत्मा का फल, और अब आत्मा की मुहर। लेकिन ये सभी पाठ, मुझे लगता है, नई वाचा के वादे को मानते हैं और उसी पर वापस जाते हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 2, जहाँ पतरस वास्तव में योएल अध्याय 2 को उद्धृत करता है, वह भी नई वाचा के संदर्भ में है, परमेश्वर के लोगों पर आत्मा का उंडेला जाना, जो कि यहजेकेल 36 में पाया जाता है, के अनुरूप है।

प्रेरितों के काम अध्याय 2 भी एक नई वाचा का पाठ होगा, जो परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलने के द्वारा नई वाचा की पूर्ति है। अब, बाद में, हम पुराने और नए नियम दोनों में पवित्र आत्मा को अधिक विस्तार से देखने के लिए एक सत्र बिताएंगे, लेकिन इस बिंदु पर, यह कहना पर्याप्त है कि पूरे नए नियम में पवित्र आत्मा और उसकी विभिन्न भूमिकाओं और अभिव्यक्तियों आदि के संदर्भ, संभवतः सभी नई वाचा की पूर्ति की ओर वापस जाते हैं और मानते हैं, कम से कम मानते हैं। इसलिए, इसके बारे में जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि उद्धार के सभी आशीर्वाद जो हम अनुभव करते हैं वे यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा आरंभ की गई नई वाचा का परिणाम हैं।

मुझे पता है कि मैंने पहले भी ऐसा कहा है, लेकिन मैं इस पर पर्याप्त जोर नहीं दे सकता। फिर से, हम अक्सर इनमें से कुछ चीजों के बारे में नए नियम की वास्तविकताओं या चर्च या ईसाई वास्तविकताओं, उद्धार, मोचन, इस भाषा में से कुछ के बारे में सोचते हैं जिसे हम पहले से ही पॉल के पत्रों में पढ़ते हैं, पवित्र आत्मा की प्राप्ति, औचित्य, आदि, ये सभी चीजें जिन्हें हम अक्सर ईसाई के अनुभव की श्रेणी में रखते हैं, हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि इन सभी आशीर्वादों का अनुभव हम यीशु मसीह के व्यक्ति की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से नए वाचा के उद्घाटन और पूर्ति के अलावा नहीं कर सकते हैं। अब, पॉल के पत्रों से बाहर निकलकर नए वाचा, नए वाचा के महत्व और नए वाचा द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को प्रदर्शित करने के लिए जो कि यिर्मयाह से नए वाचा के उद्घाटन को स्पष्ट रूप से मानते हैं या संदर्भित करते हैं, विशेष रूप से यिर्मयाह 31 और यहेजकेल अध्याय 36।

एक पाठ जिस पर मैं बहुत अधिक समय नहीं लगाना चाहता, क्योंकि हम इसे पुरानी वाचा के संबंध में पहले ही पढ़ चुके हैं, वह है इब्रानियों अध्याय 8, पद 7 से 13। इब्रानियों अध्याय 8, 7 से 13 में लेखक स्पष्ट रूप से यिर्मयाह अध्याय 31, पद 31 से 34 को विस्तार से उद्धृत करता है। अतः पौलुस के विपरीत, जो 2 कुरिन्थियों के अध्याय 3 में इसका संकेत देता है, इब्रानियों के लेखक ने यिर्मयाह 31, 31 से 34 को विस्तार से उद्धृत किया है।

लेखक पुरानी वाचा की अपर्याप्तता को प्रदर्शित करने और नई वाचा की आवश्यकता को स्थापित करने के लिए ऐसा करता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि पुरानी वाचा के साथ समस्या यह नहीं थी कि यह बुरी या दुष्ट या पापपूर्ण थी या यह एक ऐसी योजना थी जिसका उद्घाटन परमेश्वर ने किया था, बल्कि यह उलटी हो गई, इसलिए वह योजना भी पर चला गया। हालाँकि, पुरानी वाचा के साथ समस्या इस्राएल का विद्रोह और पाप था। पुरानी वाचा में परमेश्वर के लोगों के विद्रोह और पाप से निपटने और उन पर विजय पाने के लिए आंतरिक तंत्र नहीं था।

इसलिए, हम यिर्मयाह 31 में पाते हैं कि लेखक एक दिन की आशा करता है और भविष्यवाणी करता है जब परमेश्वर एक नई वाचा स्थापित करेगा जहाँ वह फिर से अपना कानून रखेगा, अपने कानून को उनके दिलों में लिखेगा, और उन्हें इसे बनाए रखने में सक्षम करेगा। इब्रानियों के लेखक को यकीन है कि यीशु मसीह ने अब नई वाचा का उद्घाटन किया है। आप ध्यान दें कि इब्रानियों की पूरी किताब में, खासकर जब आप इब्रानियों के अध्याय 9 से 10 को पढ़ते हैं, तो कुछ लोग सोचते हैं कि 8 से 10 इब्रानियों का केंद्रीय भाग है।

लेकिन जब आप उन अध्यायों को पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि एक नया वाचा तम्बू और मंदिर और बलिदान और पुरोहिताई से जुड़ा हुआ है। इसलिए, लेखक का तर्क है कि अगर उनमें से किसी एक में बदलाव होता है, तो उन सभी में बदलाव होना चाहिए। इसलिए, अगर एक नई वाचा का उद्घाटन हुआ है, तो एक नया तम्बू मंदिर होना चाहिए, एक नया बलिदान होना चाहिए, एक नया पुरोहिताई होना चाहिए।

लेखक का तर्क है कि यीशु मसीह ने उन सभी को नए वाचा के उद्धार की स्थापना और उद्घाटन के हिस्से के रूप में पूरा किया है जो मसीह अब लाता है। इसलिए, हम इसके बारे में और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हमने इब्रानियों को कई अन्य विषयों के संबंध में देखा है। और मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ और दो अन्य के बारे में बात करना चाहता हूँ, जिन्हें अक्सर सामान्य पत्र कहा जाता है।

फिर, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ समाप्त करेंगे और वाचा और नई वाचा की भाषा के कई संदर्भों को देखेंगे, विशेष रूप से नई वाचा के पूर्ण होने के संदर्भ को। लेकिन एक संभावित संदर्भ मेरे लिए दिलचस्प है, और मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि नई वाचा का संभावित संदर्भ, दूसरे पतरस के अध्याय एक में पाया जाता है। मैं इस अवलोकन के लिए स्कॉट हैफमैन का आभारी हूँ, जिन्होंने बाइबिल धर्मशास्त्र में केंद्रीय विषयों नामक निबंधों के संग्रह में वाचाओं पर अपने लेख में फिर से लिखा है।

2 पतरस 1 की तीसरी आयत से आरम्भ करते हुए हम पढ़ते हैं: कि उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसकी पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। और इन्हीं के द्वारा उसने हमें अपनी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ दी हैं कि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो इस संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। इसलिये तुम अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर ज्ञान, और ज्ञान पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति, और भक्ति पर आपसी प्रीति, और आपसी प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।

यदि आप इन गुणों को अधिकाधिक मात्रा में धारण करते हैं, तो ये आपको हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान में अप्रभावी और अनुत्पादक होने से बचाएंगे। लेकिन जिसके पास ये गुण नहीं हैं, वह अदूरदर्शी और अंधा है, जो भूल जाता है कि वह अपने पिछले पापों से शुद्ध हो चुका है। इसलिए, मेरे भाइयों और बहनों, अपने बुलावे और चुनाव की पुष्टि करने के लिए हर संभव प्रयास करें।

क्योंकि यदि तुम ये काम करोगे, तो तुम कभी ठोकर नहीं खाओगे, और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हारा भरपूर स्वागत होगा। अब, इसमें बहुत कुछ है, और मैं एक बार फिर विस्तार में नहीं जाना चाहता कि इनमें से कुछ शब्द और बातें क्या संकेत देती हैं, लेकिन हाफ़िज़ ने जिस बात पर ध्यान आकर्षित किया है, वह यह है कि जाहिर तौर पर, यह खंड वाचा की संरचना को दर्शाता है। पद तीन और चार परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो कुछ किया है, उसे स्थापित करने के लिए प्रस्तावना है।

यह वाचा का प्रावधान है, परमेश्वर का अपने लोगों के लिए प्रावधान। इसलिए परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ दिया है जो हमें ईश्वरीय जीवन के लिए चाहिए। उसने हमें अपने महान और बहुमूल्य वादे दिए हैं ताकि उनके माध्यम से आप दुनिया के भ्रष्टाचार से बचकर ईश्वरीय स्वभाव में भाग ले सकें।

इसलिए, पहले पद, तीन और चार, वाचा की प्रस्तावना होगी, या यह स्थापित करना होगा कि परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, उसके प्रावधान। फिर, वाचा की शर्तें पद पाँच से सात में पाई जाती हैं। इस कारण से, इन बातों को अपने विश्वास में जोड़ने का हर संभव प्रयास करें और अंततः ईश्वरीयता को जोड़ें।

यदि आप इन बातों को अपने पास रखते हैं, तो आप खुद को अप्रभावी होने से बचा लेंगे। फिर, अंत में, आठवीं से ग्यारहवीं आयतें वाचा के वादे और शाप होंगी। तो, आठवीं आयत, यदि आप ये काम करते हैं, मूल रूप से यदि आप ये काम नहीं करते हैं, तो आप अप्रभावी हो जाएँगे, और आप निकटदृष्टि और अंधे हो जाएँगे और भूल जाएँगे कि आप अपने पापों से शुद्ध हो चुके हैं।

लेकिन अगर आप ये काम करते हैं, तो आप कभी ठोकर नहीं खाएँगे, और आपका भरपूर स्वागत होगा। तो, यह संभव है, और मैं इसके लिए बहस नहीं करना चाहता या नहीं, लेकिन यह संभव है कि हाफमैन ने वाचा संरचना को अलग किया हो या पहचाना हो, इस मामले में नई वाचा का जिक्र करते हुए, 2 पतरस अध्याय 1 आयत 3 से 11 के पीछे। एक अन्य पाठ जो मुझे लगता है कि नई वाचा की वास्तविकताओं को प्रदर्शित करता है, वह 1 यूहन्ना की पूरी पुस्तक है।

एक बार फिर, हालाँकि, जहाँ तक मुझे पता है, 1 यूहन्ना स्पष्ट रूप से नई वाचा का उल्लेख नहीं करता है या यिर्मयाह 31 या यहेजकेल 36 या 37 से उद्धरण या संकेत नहीं करता है। यूहन्ना द्वारा संदर्भित कई अवधारणाएँ एक बार फिर यिर्मयाह 31 और आयत 36 और 37 से नई वाचा के वादों को ग्रहण करती हुई और उनसे निकलती हुई प्रतीत होती हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना ने अपनी पूरी पुस्तक में पापों की क्षमा पर बार-बार जोर दिया है, सबसे प्रसिद्ध 1 यूहन्ना 1 आयत 9 है, जहाँ वह कहता है, यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है और हमें हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करेगा।

इसलिए पापों को क्षमा करने, हमें शुद्ध करने या पवित्र करने की वह भाषा यिर्मयाह अध्याय 31, यहेजकेल 36 से नई वाचा की भाषा को दर्शाती है, कम से कम प्रतिबिंबित करती है या ग्रहण करती है। पहले यूहन्ना 2 और पद 2 में, वह हमारे पापों के लिए हमारा प्रायश्चित्त बलिदान है, न केवल हमारे पापों के लिए बल्कि पूरे संसार के पापों के लिए भी। इसलिए, ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिनका हम संभवतः यूहन्ना में पापों की क्षमा के लिए उल्लेख कर सकते हैं, लेकिन मैं केवल प्रतिनिधि वाले दे रहा हूँ।

पवित्र आत्मा, 1 यूहन्ना में लोगों के जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य। अध्याय 3, 1 यूहन्ना अध्याय 3 और पद 24, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वह उसमें रहता है और वह उनमें रहता है, और इस तरह हम जानते हैं कि वह हम में रहता है। हम इसे पवित्र

आत्मा के द्वारा जानते हैं जो उसने हमें दिया है, या शाब्दिक रूप से आत्मा के द्वारा, लेकिन उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दी है।

उसी पाठ के अध्याय 4 और पद 13 में, 4:13, इस तरह हम जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हम में रहता है; उसने हमें अपनी आत्मा दी है। इसलिए, एक बार फिर आत्मा के उपहार को देने, 1 यूहन्ना में परमेश्वर के लोगों पर आत्मा के उंडेले जाने पर ध्यान दें, जो उनके परिवर्तन और उनके जीने के तरीके से जुड़ा हुआ है, जो एक प्रदर्शन के रूप में है कि उनके जीवन में आत्मा की वास्तविकता मुझे पुराने नियम से नई वाचा की वास्तविकताओं को दर्शाती है। फिर, 1 यूहन्ना में नए जन्म की भाषा भी है।

उदाहरण के लिए, अध्याय 3 और श्लोक 9 में, कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर से जन्मा है, पाप करना जारी नहीं रखेगा क्योंकि परमेश्वर का बीज उनमें रहता है। वे पाप करना जारी नहीं रख सकते क्योंकि वे परमेश्वर से जन्मे हैं। श्लोक 10: इस तरह हम परमेश्वर की संतानों और शैतान की संतानों को जानते हैं।

जो कोई भी सही काम नहीं करता, वह परमेश्वर का बच्चा नहीं है, न ही वह जो अपने भाई और बहन से प्यार नहीं करता। अध्याय 4 और पद 7, प्रिय मित्रों, आइए हम एक दूसरे से प्यार करें, क्योंकि प्यार परमेश्वर से आता है। जो कोई भी प्यार करता है वह परमेश्वर से पैदा हुआ है।

अध्याय 5 और पद 1 में, हर कोई जो यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह है, परमेश्वर से जन्मा है। और हर कोई जो पिता से प्रेम करता है, वह अपने बच्चे से भी प्रेम करता है। अध्याय 5 की पद 4, क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है।

अध्याय 5 और श्लोक 18 में, हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करना जारी नहीं रखता। जो परमेश्वर से जन्मा है, वह उसे सुरक्षित रखता है और दुष्ट उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता, यह मसीह का संदर्भ है। लेकिन जन्म दिए जाने, पुनर्जन्म या जन्म लेने के संदर्भों पर ध्यान दें, शायद यह कुछ ऐसा ही दर्शाता है जैसा कि हम यूहन्ना अध्याय 3 और नीकुदेमुस के साथ यीशु के संवाद में पाते हैं।

नया जन्म या पुनर्जन्म का यह विचार विशेष रूप से यहजेकेल अध्याय 36 और नई वाचा के वादों से जुड़ा हुआ है। इसलिए, 1 यूहन्ना, नई वाचा का विशेष रूप से उल्लेख किए बिना, नई वाचा से जुड़ी कई आशीषों को शामिल करता है जिनका उद्घाटन किया गया है या जो नई वाचा के उद्घाटन के कारण मौजूद हैं। पापों की क्षमा, पवित्र आत्मा का उपहार, नया जन्म और पुनर्जन्म दिया जाना।

यह हमें नए नियम की आखिरी किताब पर ले आता है, और वह है प्रकाशितवाक्य की किताब। प्रकाशितवाक्य में भी कई ऐसे पाठ हैं जो नई वाचा की वास्तविकताओं को प्रदर्शित करते हैं, इसके पहले से ही प्रकट होने और अभी तक प्रकट न होने दोनों में। इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और श्लोक 5 और 6 में, पुस्तक की शुरुआत में, और यह पाठ एक और कारण से भी महत्वपूर्ण है जिसे हम बाद में देखेंगे जब हम कुछ अन्य विषयों पर चर्चा करेंगे, लेकिन श्लोक 5

से शुरू करते हुए, मैं पीछे जाऊंगा और श्लोक 4 पढ़ूंगा। यह पुस्तक के लिए जॉन के परिचय का हिस्सा है जिसमें वह इसे एक पत्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

यूहन्ना की ओर से एशिया प्रांत की सात कलीसियाओं को, जो है, जो था, और जो आनेवाला है, और सिंहासन के सामने की सात आत्माओं की ओर से, और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य गवाह, और मरे हुएों में से ज्येष्ठ, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है, उस पर अनुग्रह और शांति हो, जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू से हमें हमारे पापों से छुड़ाया है, और हमें याजकों का राज्य बनाया है। इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी यीशु मसीह के अपने लहू की इस तस्वीर से शुरू होती है, जो अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाता है, ताकि वे एक नए लोग, याजकों का राज्य बन सकें। इसलिए, इस तथ्य के आधार पर एक नए लोगों को बहाल करने और बनाने की इस धारणा पर ध्यान दें कि मसीह के लहू के माध्यम से, उसने उन्हें उनके पापों से मुक्त किया है।

उसने अपने बलिदान के माध्यम से उनके पापों को क्षमा कर दिया है। यह सब नए करार की स्थापना के उद्घाटन को मानता और याद करता है। इसके अलावा, अध्याय 5 और पद 9 में, हम अध्याय 5 और पद 9 में बिल्कुल वही या बहुत समान भाषा देखते हैं, और उन्होंने एक नया गीत गाया, जिसमें कहा गया है, आप योग्य हैं, मेमने, यीशु मसीह का जिक्र करते हुए, आप पुस्तक लेने और इसकी मुहरें खोलने के योग्य हैं क्योंकि आप मारे गए और अपने खून से आपने हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र से लोगों को भगवान के लिए खरीदा।

तो एक बार फिर, मसीह के लहू के द्वारा लोगों को खरीदने का यह विचार, मसीह का लहू, फिर से, जो एक नई वाचा का उद्घाटन करता है और अब एक नए लोगों का निर्माण करता है, लेकिन एक अंतरराष्ट्रीय लोग, हर जनजाति और भाषा और बोली आदि से बने लोग। और फिर एक और, इससे पहले कि हम बहुत जल्दी एक पाठ को देखें जिसे हमने पहले ही कुछ अन्य विषयों के संबंध में देखा है, कुछ अन्य पाठ जो स्पष्ट रूप से वाचा के संदर्भ में प्रतीत होते हैं और शायद प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक को वाचा के संदर्भ में रखते हैं, अध्याय 1 और पद 3, और फिर 22 पद 18 और 19 हैं। अध्याय 1 और पद 3 कहते हैं, धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इसे सुनते हैं और इसमें लिखी बातों को ध्यान में रखते हैं।

या शाब्दिक रूप से, जो लोग इसमें लिखी बातों का पालन करते हैं। इसलिए, जो वचन को पढ़ता और सुनता है, उसके लिए यह एक आशीर्वाद है, लेकिन विशेष रूप से वे जो इसे केवल पढ़कर और सुनकर नहीं, बल्कि इसे रखकर और इसका पालन करके जानते हैं। इसलिए, जो लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखी बातों का पालन करते हैं, उनके लिए यह एक आशीर्वाद है।

अब, दिलचस्प बात यह है कि जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय 22 के बिल्कुल अंत में जाते हैं, तो वहाँ दो दिलचस्प आयतें हैं जिनके बारे में मुझे अक्सर लगता है कि उन्हें थोड़ा गलत समझा जाता है। और वह यह है कि मैं उन सभी को चेतावनी देता हूँ जो पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते हैं। अध्याय 1 की आयत 3 से समानता पर ध्यान दें, धन्य है वह व्यक्ति जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को सुनता है।

अब मैं उन सभी को चेतावनी देता हूँ जो पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते हैं। यदि कोई व्यक्ति उनमें कुछ जोड़ता है, तो परमेश्वर उस व्यक्ति पर इस पुस्तक में वर्णित विपत्तियाँ बढ़ाएगा। और यदि कोई व्यक्ति इस भविष्यवाणी की पुस्तक से कुछ निकालता है, तो परमेश्वर उस व्यक्ति से जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से कोई भी हिस्सा छीन लेगा, जिसका वर्णन पुस्तक में किया गया है।

अब, जोड़ने और घटाने की भाषा के बारे में क्या महत्वपूर्ण है? हम आम तौर पर इन आयतों को इस संदर्भ में उद्धृत करते हैं कि नए नियम या बाइबल में कोई भी पुस्तक नहीं जोड़ी जानी चाहिए, या हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए क्योंकि इसमें जोड़ने या घटाने के लिए नहीं कहा गया है। हालाँकि, मैं इन आयतों के बारे में दो टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। नंबर एक, ये आयतें व्यवस्थाविवरण की ओर सीधा इशारा करती हुई प्रतीत होती हैं।

मुझे लगता है कि व्यवस्थाविवरण और अध्याय 4 ही वे आयतें हैं जो मैं पढ़ना चाहता हूँ। व्यवस्थाविवरण अध्याय 4, और मैं आयत 1 पढ़ूँगा। अब, इस्राएल, उन विधियों और नियमों को सुनो जो मैं तुम्हें सिखाने वाला हूँ। तो, यह उस वाचा के संदर्भ में है जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ की थी।

जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाने जा रहा हूँ, उन्हें सुनो। उनका पालन करो, ताकि तुम जीवित रहो और उस देश में जाकर उस पर अधिकार करो, जिसे तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है। जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, उसमें कुछ न बढ़ाओ और न कुछ घटाओ, परन्तु जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं, उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं के अनुसार मानो।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 में भी ऐसा ही पाठ है। लेकिन इसका मतलब यह है कि, मुझे यकीन है कि जोड़ने और घटाने की पौलुस की भाषा वाचा से जुड़ी हुई है। इसलिए, हमें अध्याय 1, पद 3 के संबंध में प्रकाशितवाक्य 22, 18 और 19 को पढ़ना चाहिए। अध्याय 1, पद 3 कहता है, सुनने और मानने से आशीर्वाद मिलता है।

लेकिन अब, अध्याय 22:18 और 19 हमें याद दिलाते हैं कि आज्ञा पालन न करने पर शाप दिया जाता है। मुझे लगता है कि जोड़ने और घटाने का मतलब अतिरिक्त वाक्य लिखना या किताबें या पैराग्राफ़ छोड़ना नहीं है। इसका मतलब परमेश्वर के वचन का पालन न करने से है।

जैसा कि हमने व्यवस्थाविवरण 4 में देखा, इस्राएलियों से कहा गया था कि वे न तो कुछ जोड़ें और न ही कुछ घटाएँ, बल्कि उसमें लिखी हर बात को ध्यान में रखें। इसलिए, प्रकाशितवाक्य में कुछ जोड़ना या घटाना इसका पालन न करने, इसकी अवज्ञा करने के समान होगा। और इसलिए, आप प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब को इस वाचा के विचार, आशीषों और शापों के अंतर्गत पाते हैं।

धन्य है वह जो इसे पढ़ता है, सुनता है और इसका पालन करता है। अब, जो लोग जोड़ते या घटाते हैं या जो पालन नहीं करते हैं, उनके लिए शाप है। तो, पूरी किताब, विशेष रूप से मूर्तिपूजा



और यीशु मसीह में अपने विश्वास से समझौता करके, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाई गई चेतावनियों का पालन करने या न करने के लिए वाचागत आशीर्वाद और शाप के संदर्भ में है।

यीशु मसीह और परमेश्वर को वह अनन्य आज्ञाकारिता और आराधना देने से इनकार करके जिसके वे हकदार हैं। इसके अलावा, आपने देखा होगा कि अध्याय 22:18 और 19, यह सुनने वाले को संबोधित है। कौन है जो सुनता है? यह चर्च होगा।

तो, यह अविश्वासियों को संबोधित नहीं है। यह पंथों और झूठे धर्मों को संबोधित नहीं है। यह परमेश्वर के लोगों को संबोधित है।

ये परमेश्वर के वाचाबद्ध लोग हैं। और अब मैं इसे नई वाचा की स्थापना के मद्देनजर लेता हूँ। परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए आशीर्वाद हैं, लेकिन इसका पालन करने से इनकार करने और इसे बनाए रखने में विफल रहने के लिए अब शाप भी हैं। अब अगले भाग में, हम संक्षिप्त रूप से पूर्ण नई वाचा को देखेंगे और फिर दूसरे विषय पर आगे बढ़ेंगे जो नई वाचाओं से बहुत, बहुत निकटता से संबंधित है।

और यही ईश्वर के लोगों का विषय है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह वाचा, विशेष रूप से नई वाचा पर सत्र 11 है।